20 संगीत : एक आजीविका के रूप में



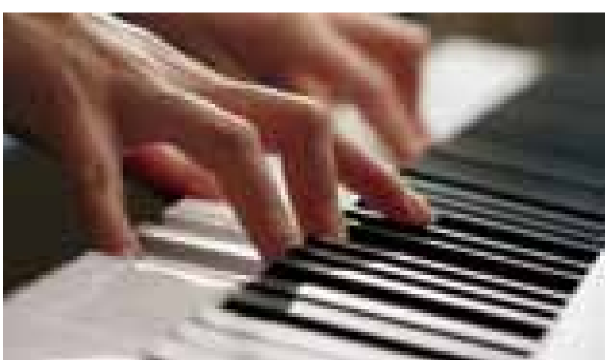
शारिक हसन

हमें अपनी प्राकृतिक इच्छाओं और प्रतिभाओं के बारे में जागरूक होना चाहिए और एक बार उन्हें जानने के बाद उनका पोषण करना चाहिए।

मैंने संगीत को नहीं, संगीत ने मुझे चुना।

यह बात बड़ी पुरानी लग सकती है, लेकिन मैंने एक पूर्णकालिक संगीतकार बनने के बारे में न तो सोचा था और न ही कल्पना की थी। लेकिन एक बार इसमें डूबा तो इसी ने मुझे सच्चा आनन्द और तृप्ति दी। यह बात मेरे कॉलेज के अन्तिम वर्ष के दौरान और भी स्पष्ट हुई, जब मैं यू.एस. के ऑबर्लिन कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य और गणित में स्नातक की पढ़ाई कर रहा था।

संगीत के प्रति यह प्रेम अचानक उत्पन्न नहीं हुआ था, जहाँ तक मुझे अपने बचपन की याद है, संगीत तभी से मेरे जीवन में है। मुझे याद है कि बचपन में मेरे माता–पिता घर या कार में अपने पसन्दीदा एलबम और रेडियो स्टेशन लगाते थे। इसके अलावा वे मुझे पाश्चात्य और भारतीय शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों मे ले जाते थे। मेरी माँ चित्रकार थीं और बहुत अच्छी पियानो वादक भी। वे विरासत में मिले पियानो पर मोजार्ट, बिथोवन, चॉपिन और डेबुसी की संगीत कृतियों को बजातीं और पूरे घर को मधुर स्वर लहरियों से भर देती थीं। घर में पियानो का होना एक महत्त्वपूर्ण बात थी क्योंकि इसके कारण पाँच वर्ष का मैं आश्चर्य और उत्साह से भर जाता और सहज रूप से उसकी ओर आकर्षित होता। पियानो के प्रति मेरा सहज आकर्षण देखकर मेरे माता–पिता ने मुझे पियानो सिखाने के लिए एक शिक्षक को नियुक्त किया और मेरी औपचारिक शिक्षा शुरू हुई।



इन वर्षों में भारत और विदेश में मुझे कई शिक्षकों ने संगीत सिखाया जिसमें बंगलौर स्कूल ऑफ म्यूजिक और लौंजी (Longy) स्कूल ऑफ म्यूजिक, बॉस्टन भी शामिल हैं। यह सब मैं अपनी नियमित पढ़ाई, स्कूल के काम और खेलकूद के साथ–साथ कर रहा था। यह मेरे लिए पाठ्योतर गतिविधि थी और मैं सप्ताह के अन्त में इसमें भाग लेता था। वैसे तो मैं सितार बजाना भी सीखने लगा पर दोनों वाद्य यन्त्रों के साथ न्याय करने के लिए मुझे समय नहीं मिलता था या शायद अनुशासन की कमी थी, अत: मैंने केवल पियानो सीखना जारी रखा। जब मैं हाईस्कूल में पहुँचा तब पियानो का अभ्यास भी मुश्किल से ही कर पा रहा था। क्योंकि तब तक यह भ्रान्ति दूर हो चुकी थी कि सिर्फ रॉयल स्कूल ऑफ म्यूजिक और ट्रिनिटी कॉलेज के अगले दौर की परीक्षाओं की तैयारी के लिए प्रतिदिन बजाने का अनवरत अभ्यास करना चाहिए। मानो यह जल्द से जल्द आठवें ग्रेड में पहुँचने के लिए किसी किस्म की चूहा दौड़ हो। बारहवीं कक्षा के आसपास करीब एक साल के लिए मैंने संगीत पूरी तरह से छोड़ दिया, न तो सीखने जाता और न ही बजाता।

इस दौरान मैं खुद को उन सभी नकारात्मक तत्वों से दूर कर पाया जो न जाने कैसे मेरे और संगीत के रिश्ते के बीच

आ गए थे। सहपाठियों से बेहतर प्रदर्शन करके विशिष्टता के साथ परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने का दबाव, साथ में मूडी और बेसब्र शिक्षक—इन सबके कारण पियानो पर रियाज के लिए बैठना एक बन्धन और अप्रिय काम बनकर रह गया था। मैंने अपने आपको स्कूली जीवन के अन्य पहलुओं में डुबो दिया जैसे लोगों से मिलना—जुलना, कक्षाएँ, खेलकूद, अन्तरविद्यालयीन टूर्नामेण्ट, बोर्ड की परीक्षाएँ और कॉलेजों में आवेदन करना।

एक दिन मैंने देखा कि मेरे कुछ दोस्त संगीत कक्ष में एक लोकप्रिय गीत गा रहे थे। वे गिटार पर उसे बजाने के लिए स्वरों को खोज रहे थे। मैं पियानो के सामने जा बैठा और उनके साथ—साथ गीत बजाने लगा और उन्हें सही स्वर सुझाने लगा। सभी लोग अत्यन्त आश्चर्यचकित और खुश हो गए। उस अनौपचारिक स्थिति में संगीत वादन ने मानो मुझे सोते से जगाया और कुछ भूली हुई किन्तु परिचित और बेफिक्र आनन्द की भावनाएँ जाग उठीं। बचपन में, पहली बार, यूँ ही वाद्य पर उँगलियाँ फिराने से जो खुशी हासिल हुई थी, वैसी ही भावना दुबारा उस दिन मन में जगी। मुझे लगा कि जो कुछ मैं कर रहा था उसके साथ मैं रचनात्मक रूप से जुड़ पा रहा हूँ। साथ ही अन्य लोगों के साथ यह कर पाने के कारण प्रासंगिकता का एहसास भी हुआ। इस तरह बहुमूल्य योगदान दे पाने में सक्षम होने पर मैंने मुक्ति की रोमांचकारी भावना को भी महसूस किया। लगा कि अध्ययन के उन वर्षों के दौरान प्राप्त किए हुए कुछ कौशल अब एक उपयोगी प्रयोजन सिद्ध कर रहे थे।

जब कॉलेज चुनने का समय आया, तब मैंने सोचा कि कॉलेज ऐसा होना चाहिए जिसमें संगीत का वातावरण और उससे सम्बन्धित अच्छी सुविधाएँ हों। वहाँ पियानो बजाने की सुविधा भी हो, यद्यपि मेरा ध्यान कला और विज्ञान विषयक कोर्स पर केन्द्रित था। इस हिसाब से ऑबर्लिन कॉलेज बिलकुल ठीक बैठता था। क्योंकि एक तो यह कला का सर्वोच्च महाविद्यालय था और दूसरे इसके परिसर में देश की सबसे अच्छी संगीत कंजरवेटरी (ललित कला के लिए विशेष सुविधाओं वाली जगह) भी थी। वहाँ पहुँचकर जब मैंने देखा कि मेरे नए सहपाठियों और छात्रावास के साथियों में से कुछ तो केवल संगीत का अध्ययन करने ही वहाँ आए थे तो मैं चौंक उठा क्योंकि यह मेरे लिए बिलकुल नई बात थी। मुझे कभी यह बात सूझी ही नहीं थी कोई व्यक्ति शास्त्रीय वायलिन या जैज़ पियानो का मुख्य विषय के रूप में अध्ययन कर सकता है, उसे ही अपनी आजीविका का साधन भी बना सकता है। क्योंकि उस समय तक, भारत में कई अन्य विद्यार्थियों की भाँति, मेरे लिए संगीत एक सम्मानजनक शौक था—उससे ज्यादा और कुछ नहीं।

लेकिन मेरे माता—पिता मेरे करियर को लेकर बेहद खुले और लचीले विचारों वाले थे और उन्होंने मुझे अपनी रुचि के अनुसार करियर चुनने की स्वतंत्रता दी। फिर भी मुझे कई विषय आकर्षक लगते थे। एक तरफ तो अपने खगोलशास्त्री पिता की तरह मुझमें विज्ञान को लेकर बहुत उत्सुकता थी और दूसरी ओर कला (जो मेरी माँ की विशेषता थी) में भी मेरी स्वाभाविक रुचि थी। लेकिन मैं साहित्य एवं लेखन की ओर प्रवृत्त था। अन्ततः मैंने अपनी स्नातक कक्षाओं में गणित व भौतिक शास्त्र के साथ अँग्रेजी साहित्य और रचनात्मक लेखन जैसे विषय लिए।

ऑबर्लिन में मैंने एक महत्त्वपूर्ण खोज की जो आगे चलकर मेरे जीवन की दिशा को बदल देने वाली थी और जिसके बारे में मैं उस समय अनजान था। यह था जैज़ संगीत जो कला का एक रूप था। इसने मेरे सामने लय, निखार, रचनात्मकता और सहजता की नई दुनिया का मार्ग उजागर कर दिया। इसकी सर्वोत्कृष्ट बात थी संगीतकारों के बीच एक अत्यन्त ऊर्जावान और सक्रिय अन्तः क्रिया जिसमें दर्शक भी शामिल होते थे। इसे वास्तव में परत—दर—परत खुलते हुए देखना बहुत सम्मोहक होता है। मेरे साथ भी यही हुआ जब मैं पहले दिन कॉलेज के छात्रावास में गया। मैं पियानो की गूँजती हुई उस ध्वनि के वशीभूत हो गया जो नीचे के हॉल से आ रही थी, ऐसा संगीत मैंने पहले नहीं सुना था। कहने की आवश्यकता नहीं कि मैं उस असाधारण किन्तु नवीन मधुर संगीत के पीछे—पीछे चलता हुआ उसके स्रोत तक जा पहुँचा। वहाँ देखा कि मेरा एक नया साथी, शायद मेरी ही तरह सत्रह वर्ष का दुबला—पतला, दिखने

में एकदम विनम्र, लाल घुँघराले बाल, बड़ी कोमलता से कीबोर्ड पर झुका हुआ, आँखें बन्द और चेहरे पर तड़प से पड़े हुए बल, पियानो बजाते–बजाते साथ में गुनगुना भी रहा था। लेकिन यह पियानो वादन सामान्य नहीं था, वह अपने आसपास से बिलकुल बेखबर अपनी धुन में डूबा हुआ था। मैंने बाद में उससे पूछा कि वह क्या बजा रहा था, तो उसने कहा कि वह तो बस बजाते–बजाते धुन की रचना करते हुए आगे बढ़ा जा रहा था। मैं स्तब्ध रह गया !

हम दोस्त बन गए और वह बहुत कम फीस में मुझे सिखाने को राजी हो गया। हमारे सबक साप्ताहिक जैम सैशन्स में बदल जाते, जिनके माध्यम से उसने मुझे ब्लूज़ और जैज़ की प्रारम्भिक दुनिया से परिचित करवाया। सप्ताह में एक बार उस पल में होने का रोमांचकारी अनुभव इस बात के लिए काफी था कि उसे पाने की कोशिश बार–बार की जाए। ऑबर्लिन में वातावरण कुछ ऐसा था कि मुझे ऐसे अनेक अवसर मिले जिसमें अतिथि शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों ही से उनके द्वारा गाया–बजाया जाने वाला असाधारण संगीत सुनने को मिलता था। इन अनुभवों से मुझे प्रेरणा मिलती थी कि मैं एक नए जुनून और उत्साह के साथ पियानो बजाऊँ और मेरे भीतर संगीतात्मक नवचेतना जन्म लेती।

कॉलेज के तीसरे वर्ष के बाद मैं एक सेमेस्टर की छुट्टी लेकर भारत लौटा। मैंने बंगलौर के एक लोकप्रिय क्लब में एक संगीत कार्यक्रम के अन्त में अपना कार्यक्रम पेश किया। क्लब के मालिक ने उसी क्षण अगले सप्ताह के लिए मेरा कार्यक्रम पक्का कर दिया। यह मेरा पहला कार्यक्रम था। इसके बाद कई और कार्यक्रम हुए और शीघ्र ही मैं अपने खुद के बैण्ड के साथ पूरे भारत में कार्यक्रम करने लगा। इतना ही नहीं, इस क्षेत्र में प्रसिद्ध कई लोगों के साथ संगत भी करने लगा। इससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और मेरे सामने यह सच्चाई भी आई कि मैं वह काम कर सकता था जिससे मुझे बेहद प्यार है, जिसके लिए मुझे सम्मान और सराहना मिले और जिससे पैसा भी कमाया जा सके! लगा कि वाकई इसे आजीविका बनाया जा सकता है। इस समय मेरे लिए इन बातों का कोई मतलब नहीं था कि मैं और क्या–क्या अच्छी तरह से कर सकता हूँ या मुझमें और कौन–सी क्षमताएँ हैं, क्योंकि अब मैं अपने आप को संगीत के अतिरिक्त कुछ और करते हुए देख ही नहीं सकता था।

इससे पहले कि मैं किसी बात को ज्यादा रूमानी रंग दूँ, यह कहना उचित होगा कि अगर हम यह सोचते हैं कि कला को आजीविका बनाने से एक स्थिर आमदनी निश्चित हो जाएगी तो इसमें थोड़ा सन्देह तो है। कला की शिक्षा सस्ती नहीं है और सालों के कठोर प्रशिक्षण के बाद आपको पता चलता है कि इसमें आर्थिक लाभ निश्चित नहीं है या आपके कौशल और व्यावसायिक सफलता में भी कोई सम्बन्ध नहीं है। वैसे यह जरूरी नहीं कि भूख से मरने वाले कलाकारों वाला जो जुमला प्रचलित है (मैं इसके अनेक अपवादों को जानता हूँ), उसके अनुसार किसी का भाग्य बर्बाद हो ही जाए, सच तो यह है कि सम्भावित कठिनाइयों के बावजूद आपमें इसे करने का जुनून होना चाहिए।

जब मैं देखता हूँ कि ढेर सारे लोग एक समूह में एकत्र होकर उस पल को साझा कर रहे हैं जिसमें हमारी आत्मा का उन्नयन और उसे प्रेरित करने की क्षमता है, तो मुझे अपने मौजूदा काम को जारी रखने की प्रेरणा मिलती है। आप एक प्रकार से ऐसे सांस्कृतिक राजदूत की भूमिका अपना लेते हैं जो अपने आसपास के लोगों को प्रभावित कर सकता है, विभिन्न समुदायों के बीच आदान–प्रदान का हिस्सा बन सकता है। इस प्रकार आप समाज की आवाज बन जाते हैं। एक तरह से सकारात्मक बदलाव को प्रभावित करने की जिम्मेदारी भी आप पर आ जाती है। जब मैं महान संगीतकारों को दुनिया भर में बड़े पैमाने पर ऐसा करते हुए देखता हूँ तो मुझे प्रेरणा मिलती है और विनम्रता बढ़ती है। इस वजह से मुझमें प्रयत्न करते रहने का जज्बा बना रहता है। मुझे यह बात भी सदा याद रहती है कि सीखने का कोई अन्त नहीं।

आजीविका के लिए इस तरह के विकल्प तलाशने के लिए और अधिक विद्यार्थियों को कैसे समर्थ किया जा

सकता है? सबसे पहले हमें अपनी प्राकृतिक इच्छाओं और प्रतिभाओं के बारे में जागरूक होना चाहिए और उन्हें जानने के बाद उनका पोषण करना चाहिए। आत्म–बोध की इस प्रक्रिया को जबरन लादना नहीं चाहिए, बल्कि इसे अपने आप होने देने के लिए पर्याप्त समय देना चाहिए, जिससे यह विभिन्न व्यक्तियों में विभिन्न कोटियों और आयु में प्रकट हो सके।

समर्थ होने के लिए आपको बहुत आत्म–प्रेरित होना चाहिए। आपको यह पता होना चाहिए कि अगर आप तहे–दिल से किसी काम को करने के लिए प्रतिबद्ध हैं तो आप उसमें अवश्य सफल होंगे। यह मुहावरा सच है कि, “सफलता तभी मिलती है जब तैयारी और अवसर का मिलन होता है”। जब कोई अवसर आपके सामने आए तो उसके लिए जो तैयारी करनी हो, उसे कीजिए, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि आपको और अवसरों की तलाश नहीं करनी चाहिए या खुद के लिए अवसरों का सृजन नहीं करना चाहिए। उस क्षेत्र के विशेषज्ञों से मिलिए, उनकी सलाह लीजिए और सम्भावनाओं व उसके लिए उठाए जाने वाले कदमों के बारे में जितना सम्भव हो उतना पता लगाइए। हो सकता है कि अच्छे शिक्षक या कला के मुख्य केन्द्र की खोज में आपको दूसरे शहरों में जाना पड़े।

जहाँ तक मेरा सवाल है, यह मेरा सौभाग्य था कि मुझे ऐसे माता–पिता मिले जिन्होंने ऑबर्लिन, बिल ईवान्स पियानो एकेडमी (पेरिस), बर्कली कॉलेज ऑफ म्यूजिक (बॉस्टन) में पढ़ाई करते समय मुझे अपना पूरा समर्थन दिया। वे वर्तमान में भी मेरा साथ दे रहे हैं, जब मैं मैनहट्टन स्कूल ऑफ म्यूजिक (न्यूयॉर्क सिटी) में जैज़ पियानो और रचना में स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहा हूँ। मुझे पता था कि अपने काम को अगले स्तर तक ले जाने के लिए मुझे संगीत के केन्द्र में और संगीतकारों के विविध समुदाय के साथ रहना होगा जो संगीत की उपलब्धि या सीखने के स्तर को बहुत ऊँचा रखते हैं। इन संस्थानों में से अधिकांश में मुझे छात्रवृत्ति मिल गई, जिसके बिना इस प्रकार की शिक्षा पाना मेरे लिए असम्भव था। शैक्षिक संस्थानों में अकसर छात्रवृत्ति के अवसर होते हैं पर सरकारी और निजी संस्थान भी कुछ क्षेत्रों में अनुदान देते हैं, आप उन पर भी नजर रखें। इन सबके लिए पहल, अनुसन्धान, समय एवं दृढ़ता की जरूरत होती है। करीब–करीब सभी लक्ष्यों को पाया जा सकता है–बस उसके लिए आप जितनी तैयारी कर सकते हों, कीजिए और धीरे–धीरे उसके करीब जाने के लिए कदम बढ़ाइए, भले ही इसमें समय लगे।

मुझे बहुत खुशी है कि मैं अपने आप को किसी न किसी रूप में सिद्ध कर पाया। मैं यह देखकर बहुत प्रोत्साहित होता हूँ कि मैंने काफी कुछ हासिल किया है जबकि शुरू–शुरू में अवसरों की कमी थी। मैं भारत में बड़ा हुआ था और मैंने अपेक्षाकृत देर से शुरुआत की थी (जो यह बताता है कि कुछ भी समयातीत नहीं है), तो भी मैं अपनी उन्नति और विकास से सन्तुष्ट हूँ। बेशक, मुझे लगता है कि काश! मैं जो कुछ करना चाहता था उसका एहसास मुझे पहले ही हो जाता और दूसरे युवा लोगों को भी यह मौका मिलता। मैं आशा करता हूँ कि स्कूल स्तर पर कला और संगीत की नींव मजबूत होने से विद्यार्थी अपने सामने फैली हुई विशाल सम्भावनाओं को देख पाएँगे।

शारिक हसन *भारत में युवा पीढ़ी के अग्रणी पियानोवादक और संगीतकारों में से एक हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत परम्परा में काम करने के साथ–साथ उन्होंने फ्रांस और यू.एस.ए. में जैज़ और शास्त्रीय संगीत के अध्ययन में कई साल बिताए। बर्कली कॉलेज ऑफ म्यूजिक में उन्हें छात्रवृत्ति दी गई और उन्हें डेनिलो पेरेज के संरक्षण में बर्कली ग्लोबल जैज़ इन्स्टिट्यूट के विशिष्ट प्रतिष्ठा कार्यक्रम के लिए चुना गया। उन्होंने दुनिया भर में प्रदर्शन किया है जिनमें ब्लू नोट (न्यूयॉर्क), पनामा जैज़ फेस्टिवल और नैन्सी जैज़ फेस्टिवल (फ्रांस) शामिल हैं। उनसे* sharik.hasan@gmail.com *पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवादः*** *नलिनी रावल*